

Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, [Biblica Inc.](#), 2023, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिल्लिका)

JOB

अथूब 1:1-5, अथूब 1:6-2:10, अथूब 2:11-3:26, अथूब 4:1-31:40, अथूब 32:1-37:24, अथूब 38:1-40:5, अथूब 40:6-42:6, अथूब 42:7-17

अथूब 1:1-5

अथूब के पास वह सब कुछ था जिसकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। उसके पास एक बड़ा परिवार और कई दास थे। वह पशुधन का एक सफल किसान था। वह बहुत सम्मानित था और अपने रहने के क्षेत्र में अधिकार रखता था। वह परमेश्वर के प्रति भी पूरी तरह से समर्पित था। वह वही करता था जो परमेश्वर चाहते थे। उसने बलिदान करके दिखाया कि वह परमेश्वर का कितना सम्मान करता है। वह ऐसा तब करता था जब उसका परिवार पाप करता था। वह तब भी ऐसा करता था जब उसे लगता था कि उन्होंने पाप किया होगा। वह चाहता था कि उसके परिवार का हर व्यक्ति ऐसा जीवन जीए जो शुद्ध और स्वच्छ माना जाता था। इससे वे सभी मिलकर परमेश्वर की आराधना कर सकते थे।

अथूब 1:6-2:10

परमेश्वर चाहते थे कि शैतान अथूब पर ध्यान दे। शैतान ने अथूब पर आरोप लगाया। उसने अथूब पर आरोप लगाया कि वह केवल इसलिए परमेश्वर की सेवा करता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी है। शैतान चाहता था कि परमेश्वर अथूब को परीक्षा में डालें। उसे यकीन था कि अथूब परमेश्वर के खिलाफ बुरी बातें बोलेगा। अगर उसे तकलीफ़ें दी जाएँ तो वह ऐसा करेगा। इसका मतलब था कि अथूब परमेश्वर का सम्मान करना बंद कर देगा। परमेश्वर ने शैतान को अथूब के जीवन को छोड़कर उसके पास मौजूद सभी चीज़ों को छीनने का अधिकार दिया। पहले शैतान ने अथूब के पशुओं, उसके सेवकों और उसके बच्चों को छीन लिया। अथूब शोक करते हुए भी परमेश्वर के सामने रिनगर रहा। उसने पहचान लिया कि परमेश्वर ने उसे अच्छी चीजें पाने की अनुमति दी थीं। और उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उन्हें छीनने की भी अनुमति दी है। अथूब ने स्वीकार किया कि परमेश्वर को उसके जीवन में क्या होता है, यह तय करने का अधिकार था। उसने अपने दुख में भी परमेश्वर के नाम की प्रशंसा की। फिर शैतान ने अथूब का स्वास्थ्य छीन लिया। अथूब का शरीर दर्द में था। वह राख में बैठ गया। अपने गहन दुःख को दिखाने के

लिए, यह एक आम प्रथा थी। अथूब की पत्नी ने देखा कि वह कितना दुखी था। उसने सोचा कि उसके लिए मरना बेहतर होगा। उसने सुझाव दिया कि अथूब परमेश्वर के खिलाफ बोले ताकि परमेश्वर उसे मार डालें। अथूब ने सोचा कि यह विचार मूर्खतापूर्ण था। समझदारी का कार्य यह है कि चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहना।

अथूब 2:11-3:26

अथूब के दोस्तों एलीपज, बिल्दद और सोपर ने उसे सांत्वना देने के लिए उससे मुलाकात की। इन लोगों ने अथूब के दुख में उसका साथ दिया। उन्होंने पहचाना कि अथूब कितनी भयानक पीड़ा में था। उन्होंने कई ऐसे काम किए जो उस समय शोक मनाने वाले लोगों के लिए आम बात थी। उन्होंने सात दिनों तक चुप रहकर अथूब के प्रति अपना सम्मान भी दिखाया। वे पहले अथूब के बोलने का इंतजार कर रहे थे। उसका भाषण एक लंबी कविता के रूप में दर्ज किया गया है। अथूब ने बताया कि उसका जीवन कितना दुखद और कड़वा हो गया था। उसके पास कोई शांति या आराम नहीं था। उसने कहा कि भला होता यदि वह पैदा ही नहीं हुआ होता। अथूब ने सोचा कि परमेश्वर उन लोगों को क्यों जीने देते हैं जो दुःख-तकलीफ़ें झेल रहे थे।

अथूब 4:1-31:40

एलीपज और बिल्दद ने तीन-तीन बार भाषण दिए। सोपर ने दो बार भाषण दिया। उनके सभी भाषण लंबे कविताओं के रूप में दर्ज हैं। एलीपज, बिल्दद और सोपर ने समझाया कि उन्हें क्यों लगता है कि अथूब को पीड़ा हो रही है। एलीपज ने अपनी ज़िंदगी में देखा था कि मुसीबतें मूर्ख लोगों पर ही आती हैं। पीड़ा उन्हें उनके पापों से सिखाने और सजा देने का तरीका था। एलीपज का मानना था कि यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। उसे विश्वास था कि यही अथूब के साथ भी हो रहा था। बिल्दद ने देखा था कि परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ न्याय नहीं लाते जिन्होंने पाप नहीं किए। यह एक सबक था, जो लोग सैकड़ों सालों से सिखाते आ रहे थे। बिल्दद का मानना था कि

यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। इसलिए उसने सोचा कि अथूब और उसके परिवार को उनके पापों के लिए सजा दी जा रही थी। सोपर को यकीन था कि अधर्मी लोग हमेशा सजा पाते हैं। उसका मानना था कि दुनिया में हमेशा से चीजें ऐसी ही होती आ रही हैं। उसे पूरा यकीन था कि परमेश्वर अथूब के पापों के कारण उस पर न्याय ला रहे थे। अथूब ने हर बार एलीपज, बिल्दद और सोपर की बातों का प्रतिउत्तर दिया। अथूब दुखी और क्रोधित था क्योंकि उसके दोस्तों ने ऐसी बातें कहीं जो मददगार नहीं थीं। उनकी कहीं गई बहुत सी बातें सच थीं। लेकिन जीवन में जो उदाहरण उन्होंने देखा था वह अथूब के मामले में लागू नहीं होता था। अथूब ने गुप्त रूप से पाप नहीं किया था। अथूब यह दावा नहीं करता कि उसने कभी पाप नहीं किया। लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसे उसके पापों के लिए सजा नहीं दे रहे थे। अथूब जानता था कि उसने वैसा ही जीवन जिया जैसा परमेश्वर चाहते थे कि लोग जिएं। उसके दोस्त उसे नहीं समझते थे। उन्होंने उस पर झूठा आरोप लगाया। अथूब को विश्वास था कि परमेश्वर उसे समझते हैं। अथूब को विश्वास था कि परमेश्वर जानते हैं कि उसने कोई गुप्त पाप नहीं किया है। अथूब चाहता था कि परमेश्वर उसे समझा एकि उसका जीवन इतना कठिन क्यों हो गया है। अथूब परमेश्वर के कार्यों के द्वारा उलझन में पड़ा था और उन पर क्रोधित था। लेकिन अथूब ने परमेश्वर के प्रति सम्मान बनाए रखा और बुराई से बचता रहा। उसने बहुत कष्ट में भी ऐसा ही किया। इससे पता चलता है कि अथूब में बुद्धि और समझ थी।

अथूब 32:1-37:24

एलीहू अथूब के दूसरे दोस्तों से छोटा था। ऐसा माना जाता है कि वह भी एदोम से था। एलीहू एलीफज, बिल्दद और सोपर से नाराज था। उन्होंने अथूब को पूरी तरह से उत्तर नहीं दिया था यह नहीं दिखाया था कि अथूब कैसे गलत था। एलीहू को लगा कि अथूब का परमेश्वर से सवाल पूछना गलत था। उसे लगा कि अथूब मानता था कि वह सही है और परमेश्वर गलत हैं। इससे एलीहू नाराज हो गया। लेकिन अथूब के कष्टों के बारे में उसने जो कहा दिया वह दूसरों के जैसा ही था। एलीहू मानता था कि परमेश्वर ने अथूब को सुधारने के लिए उसे कष्ट सहने दिया। इस कष्ट को अथूब को पाप करने से रोकने के लिए एक चेतावनी के रूप में देखा गया। एलीहू को लगा कि इससे अथूब को उसके पापों के लिए मौत की सजा से बचाया जा सकता है। एलीहू समझता था कि परमेश्वर कभी भी कुछ बुरा, गलत या अनुचित नहीं करते हैं। इसलिए उसे लगा कि अथूब का यह सोचना गलत था कि परमेश्वर ने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया। उसे लगा कि इससे पता चलता है कि अथूब घमंड से भरा हुआ था। एलीहू समझ गया कि परमेश्वर के पास हर चीज पर पूरा अधिकार है। परमेश्वर सृष्टिकर्ता है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज को

बनाया है। परमेश्वर ही एकमात्र हैं जो दुनिया के जीवन को बनाए रख सकते हैं। एलीहू के लिए, इसका मतलब था कि लोग परमेश्वर के किसी काम को करने के कारणों को नहीं समझ सकते हैं। इसलिए उसने सोचा कि लोगों को परमेश्वर के कारणों के बारे में सवाल नहीं पूछने चाहिए।

अथूब 38:1-40:5

अथूब को लगा कि परमेश्वर उसकी बात नहीं सुनेंगे। इससे पहले अथूब ने कहा था कि उसे लगता है कि परमेश्वर उसे कुचलने के लिए तूफान भेजेगा। अथूब को लगा कि अगर वह परमेश्वर को पुकारेगा तो परमेश्वर ऐसा करेगा। इसके बजाय, परमेश्वर ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी। परमेश्वर ने अथूब, एलीपज, बिल्दद, सोपर और एलीहू की हर बात सुनी। अथूब को तूफान से कुचलने के बजाय, परमेश्वर ने तूफान में से अथूब से बात की। परमेश्वर ने अथूब के पूछे गए सवालों का जवाब नहीं दिया। उन्होंने अथूब को यह नहीं बताया कि लोग क्यों पीड़ित होते हैं। परमेश्वर ने यह नहीं बताया कि शैतान ने अथूब की परीक्षा का सुझाव दिया था। इसके बजाय, परमेश्वर ने अथूब से कई सवाल पूछे। परमेश्वर ने पूछा कि अथूब क्या क्या कर सकता है। फिर परमेश्वर ने उन चीजों को बताया जो वह कर सकते हैं। परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज को बनाया। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि जो उन्होंने बनाया है वह उसी तरह काम करे जैसा वह चाहते हैं। इसमें भूमि, पानी, आकाश, तारे और पशु शामिल हैं। परमेश्वर सभी पशुओं की देखभाल करते हैं। इसमें वे पशु भी शामिल हैं जो मनुष्यों द्वारा पाले नहीं जाते हैं। परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी और पशुओं के बारे में बहुत कुछ कहा। जिस तरह से उन्होंने उनके बारे में बात की उससे अथूब को कुछ महत्वपूर्ण समझ में आया। मनुष्य केवल परमेश्वर की सृष्टि का एक हिस्सा हैं। एक मनुष्य होने के कारण, अथूब परमेश्वर की सृष्टि के बारे में सब कुछ नहीं समझ सकता था। अथूब यह नहीं समझ सकता था कि सृष्टि की देखभाल के लिए क्या-क्या आवश्यक है। अथूब परमेश्वर की योजनाओं को नहीं समझ सकता था। अथूब यह नहीं समझ सकता था कि परमेश्वर ने जो किया उसके पीछे क्या कारण थे। और अथूब परमेश्वर का काम परमेश्वर से बेहतर नहीं कर सकता था। अथूब का परमेश्वर को पहला उत्तर चुप रहना था।

अथूब 40:6-42:6

परमेश्वर को दिए अपने दूसरे उत्तर में अथूब ने एक महत्वपूर्ण बात पहचानी। जब वह अपने मित्रों से बात कर रहा था, तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस बारे में बात कर रहा था। उसने ऐसी चीजों के बारे में बात की थी जो उसके लिए जानना बहुत ही अद्भुत था। इसका मतलब है कि वे ऐसी

चीजें थीं जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकते हैं। इसे पहचानने से अथूब विनम्र हो गया। अथूब ने कहा कि उसे खुद से नफ़रत है। इसका मतलब यह नहीं है कि अथूब सीचता था कि वह एक बुरा व्यक्ति है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे खुद से कोई प्यार नहीं था। इसका मतलब है कि वह अब परमेश्वर से बहस नहीं करना चाहता था। अथूब ने उसके साथ अन्याय करने के लिए परमेश्वर पर आरोप लगाना बंद कर दिया। परमेश्वर ने अथूब को दिखाया कि वह अपने सभी प्राणियों का कितना ख्याल रखते हैं। अथूब को समझ में आ गया कि वह परमेश्वर के प्राणियों में से एक है। इसलिए अथूब समझ गया कि वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकता है क्योंकि परमेश्वर उसके सृष्टिकर्ता थे। परमेश्वर ने खुद को अथूब को दिखाया था। जब अथूब ने परमेश्वर को सुना और समझा, तो उसने देखा कि परमेश्वर उसके भरोसे के योग्य थे।

अथूब 42:7-17

एलीपज, बिल्दद और सोपर ने परमेश्वर के बारे में ऐसी बातें कहीं थीं जो सच नहीं थीं। उन्होंने परमेश्वर द्वारा अथूब को परीक्षा में डालने के कारणों के बारे में मूर्खतापूर्ण बातें कहीं थीं। परमेश्वर इस बात से नाराज थे। जब उन्होंने बलिदान दिया और अथूब ने उनके लिए प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने अथूब को अपना सेवक कहा। इसका मतलब था कि अथूब ने वह काम किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए दिया था। परमेश्वर ने कहा कि अथूब ने परमेश्वर के बारे में जो कुछ कहा था वह सच था। इसमें वे प्रश्न शामिल हैं जो अथूब ने पूछे थे। इसमें अथूब का दुखी, क्रोधित और भ्रमित होने के बारे में बात करना शामिल है। इसमें अथूब का परमेश्वर को देखने और उनसे आमने-सामने बात करने की लालसा शामिल है। परमेश्वर ने अथूब के बारे में जो कहा उससे पता चलता है कि अथूब शैतान द्वारा सुझाई गई परीक्षा में सफल हुआ। अथूब ने परमेश्वर का सम्मान करना जारी रखा। उसने परमेश्वर का सम्मान तब भी किया जब ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर उसके जीवन में कुछ भी आशीष नहीं दे रहे हैं। जब परीक्षा समाप्त हो गई तो अथूब के साथ फिर से सब कुछ बहुत अच्छा हो गया। इस तरह अथूब के जीवन में उसके दोस्तों द्वारा कहीं गई एक बात सच हो गई। एलीपज, बिल्दद, सोपर और एलीहू ने जीवन की एक रीत पहचानी थी। वह रीत उन लोगों के बारे में था जो परमेश्वर की आज्ञा मानते और उनकी सेवा करते हैं। एलीहू ने कहा था कि जो ऐसा करते हैं उनके साथ सब कुछ अच्छा होगा। परमेश्वर ने अथूब को फिर से सफलता की आशीष दी और उसे परीक्षा से पहले की तुलना में अधिक दिया। उसने अथूब को उन सभी चीजों में अधिक दिया जिनकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। इसमें कई बच्चे, पशुधन, सम्मान और लंबी आयु शामिल थी।